Page No. :
Date : / /

फसलें - चावल, मक्का, ज्वार आदि हैं। इन फसलों को अधिक तापमान तथा अपेक्षाकृत अधिक आर्द्रता की आवश्यकता होती है। खरीफ का मौसम समाप्त होने के पश्चात रबी का मौसम शुरू होता है। यह शीत ऋतु के अनुरूप रहता है। इस मौसम में वे फसलें उगाई जाती हैं जो कम तापमान तथा अपेक्षाकृत कम वर्षा में पनप सकती हैं। इस मौसम की प्रमुख फसलें - गेहूँ, जौ, ज्वार आदि हैं।

जायद ग्रीष्मकालीन शस्य मौसम है। इसकी प्रमुख फसलें चावल, मक्का आदि हैं। अब हालों के भी कुछ ऐसे बीजों का विकास किया गया है, जो ग्रीष्मकाल में सफलतापूर्वक बोए जा सकते हैं।

भारतीय कृषि ऋतु

कृषि ऋतु	प्रमुख फसलें उत्तरी भारत राज्य	दक्षिणी राज्य
खरीफ (जून से सितंबर)	चावल, कपास, बाजरा, मक्का, ज्वार, अरहर(दु)	चावल, मक्का, रागी, ज्वार तथा मूँगफली
रबी (अक्टूबर से मार्च)	गेहूँ, चना, तोरई, सरसों, जौ वनस्पति, सब्जियाँ, फल, चारा फसलें	चावल, मक्का, रागी, मूँगफली चावल, सब्जियाँ चारा फसलें
जायद (अप्रैल से जून)		

Scanned with CamScanner

Page No. :
Date : / /

कम है। इसका कारण कृषकों का भाग्यवादी दृष्टिकोण, छोटे आकार की जोत, कृषि के पुराने ढंग, पूँजी का आभाव आदि है।

8. कृषि करने के प्राचीन व परम्परागत ढंग – अभी भी पंजाब को छोड़कर देश के विभिन्न राज्य में (बिहार, झारखण्ड व अन्य में) प्राचीन तरीकों व उपकरणों से ही परिवार के सभी लोग मिलकर कृषि कार्य कर लेते हैं। आधुनिक मशीनों का अभाव है जिससे प्रतिवर्ष कृषि उत्पादन कम रहता है।

9. कृषि आदानों की कमी – पूँजी के अभाव में किसान कृषिगत नवीन उपचारों को नहीं अपना पाते हैं। वे रासायनिक उर्वरकों, अधिक उपजदायी उन्नत बीजों, कीटनाशकों, कृषि मशीनों को खरीद नहीं पाते हैं।

10. कृषि शोध, शिक्षा एवं प्रशिक्षण का अभाव – देश में कृषि शोध प्रयोगशाला एवं खेतों के बीच व कृषक के बीच समन्वय का अभाव है। सभी कृषक नवीन कृषि शोध तकनीकों को अपना नहीं पाते हैं।

Q7. रबी, खरीफ़ एवं जायद फसलों के बारे में बताइए।

Ans भारतीय कृषि – वर्ष में तीन शस्य मौसम पाए जाते हैं जिन्हें खरीफ़, रबी तथा जायद कहते हैं।
खरीफ़ का मौसम मानसूनी के आरंभ होते ही शुरू हो जाता है। इस मौसम की मुख्य

REDMI NOTE 8

Scanned with CamScanner

Page No. :
Date : / /

कम हो जाती है, मिट्टियों में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटेशियम की कमी हो जाती है।

सिंचाई सुविधाओं की कमी – देश के अधिकांश क्षेत्रों में ग्रीष्मऋतु में सूखे की स्थिति उत्पन्न हो जाती है भारतीय कृषि आज भी मानसून पर आधारित है। देश में सिंचाई साधनों की कमी है।

पूँजी का अभाव – देश के अधिक संख्या में कृषक आज भी गरीब हैं कृषि फसलों का उचित सरकारी मूल्य न मिलने के कारण, निम्न उत्पादकता के कारण किसानों के पास पूँजी का अभाव रहता है। पूरे फसली वर्ष में फसल उत्पादन के प्रत्येक कार्य में किसान के पास पूँजी की कमी रहती है।

कृषि फसलों के रोग – दिन प्रतिदिन कृषि फसलों में अधिक कीटनाशकों के प्रयोग के बावजूद भी कृषि फसलों में रोग लग जाते हैं। जिससे निम्न उत्पादकता होती है। मानव स्वास्थ्य को देखते हुए फसलों में सीमित मात्रा में कीटनाशकों का प्रयोग होता है।

कृषि की न्यून उत्पादकता – देश में बड़े कृषि क्षेत्र तथा अधिक संख्या में ग्रामीण जनसंख्या श्रमिक होने के बावजूद भी देश में गेहूँ व चावल व अन्य खाद्यान्न फसलों का उत्पादन अभी भी

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

Scanned with CamScanner

Page No. :
Date : / /

राज्य है। यहाँ भारत का 70% कहवा उपजाया जाता है। भारत का 58% कहवा क्षेत्र भी कर्नाटक में ही है। काडूर, हसन आदि प्रमुख उत्पादक जिले हैं। तमिलनाडु में नीलगिरी की पहाड़ियों पर कहवा उगाया जाता है। केरल राज्य में कोल्लम, अरनाकुलम, ट्रीशूर आदि जिलों से कहवा प्राप्त किया जाता है।

Q6. भारतीय कृषि की समस्याओं को लिखे।

Ans 1. ~~जलवायु~~ छोटे आकार के कृषि क्षेत्र - भारत में खेतों का आकार छोटा है परिवार में बटवारों के कारण लगातार खेतों का आकार छोटा हो रहा है जिससे कृषि क्षेत्रों में बड़ी मशीनों का प्रयोग नहीं हो पाता अलग-अलग समय में कृषि कार्य में लागत अधिक व उत्पादन कम हो पाता है। यहाँ विदेशों की भाँति सहकारी व सामूहिक कृषि नहीं होती है।

2. उत्तम बीजों की कमी - भारतीय किसान गरीब हैं वे उत्तम बीजों बीज नहीं खरीद पाते हैं जिससे सस्ते व घटिया बीजों के प्रयोग से उत्पादन कम होता है।

3. खाद तथा उर्वरकों का सीमित प्रयोग - भारत में खाद तथा उर्वरकों का प्रयोग कम होता है। जिससे ~~सस्ते व घटिया बीजों के प्रयोग से~~ उस भूमि की उर्वरा तथा उत्पादन शक्ति धीरे-धीरे

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

Scanned with CamScanner

/8/19

असम ~~व क्षे~~ ब्रह्मपुत्र घाटी से शुरू की गई थी। और चाय आज एक प्रमुख पेय पदार्थ बन गया है।

उपज की दशाएँ

चाय की पैदावार के लिए 25% से 30% सेल्सियस का तापमान का होना ~~ब~~ जरूरी होता है। चाय की खेती ~~उष्णकटि~~ उपोसन और उसन कटिबंधीय क्षेत्रों में कि जाती है।

वर्षा (Rainfall)

चाय की खेती के लिए 200 से 250 से. मी. वार्षिक वर्षा चाहिए होता है साथ ही साथ पत्तियों के विकास के लिए वर्षा का निर्न्तर होना भी जरूरी होता है। बार- ~~बा~~ बार ~~ब~~ ~~भ~~ बौछार से नई पत्तियाँ और पत्तियों में वृद्धि भी होती है।

मृदा (Soil)

चाय की खेती के लिए गहरी, सीढ़ि नुमा और उर्वरक मिट्टी की आवश्यकता होती है। साथ ही साथ मिट्टी में ~~प~~ , पोटास और लोहे (Iron) की मात्रा भी होनी चाहिए ताकि झाड़ियाँ तेजी से बढ़े। सीढ़ि नुमा क्षेत्र इसलिए होना चाहिए ताकि पानी ठहरा हुआ न हो क्योंकि अगर पानी इनके जड़ों में ठहरेगा तो जड़े सड़ जाएगी।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA
Scanned with CamScanner